Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : बहू प्रतिभा संपन्न कलाकार एवं साहित्यकार

पूजा शर्मा (शोधार्थी)

सिटी यूनिवर्सिटी लुधियाना, पंजाब

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

सारांश-

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' एक कवि, उपन्यासकार, निबन्धकार और कहानीकार थे। वे **जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत** और **महादेवी वर्मा** के साथ **हिंदी साहित्य** के चार प्रमुख स्तंभों में से एक माने जाते हैं। निराला जी के काव्य में फक्कड़पन, निर्भीकता ,क्रांतिकारी ,स्वच्छंदता तथा प्रगतिशील युक्त नवीन भावों को देखा जा सकता है। उन्होंने निर्भीकता के साथ व्यक्तिगत अनुभूति के भावों की स्वच्छंद अभिव्यक्ति को महत्व दिया। इसलिए स्वभावतः उनके काव्य में हमें आत्मस्वीकृति और आत्मभिव्यक्ति मिलती है।

निराला जी के काव्य में प्रगतिशील तत्व आरंभ से ही विद्यमान थे। वास्तव में आधुनिक साहित्य के जितने भी प्रगतिशील मूल्य हैं उन सब को उनकी रचनाओं में देखा जा सकता है। उन्होंने गद्य और पद्य दोनों में ही हाथ आजमाया। उनके गद्य को पढ़े बिना प्रगतिशील मूल्यों को समझा नहीं जा सकता ।बहुमुखी प्रतिभा के धनी निराला वास्तव में निराले ही थे। उन्होंने अपने समय की हर समस्या को ना केवल साहित्य का विषय बनाया बल्कि उसे सशक्त अभिव्यक्ति भी दी।

निराले व्यक्तित्व के कारण इन्हें सैकड़ों में सरलता से पहचाना जा सकता था । सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' एक कवि, उपन्यासकार, निबन्धकार और कहानीकार थे। निराला ने 1920 ई० के आसपास से लेखन कार्य आरंभ किया। निराला की प्रथम रचना **'जूही की कली' 1922 ई० में पहली बार प्रकाशित** हुई थी। उन्होंने कई कहानियां उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं। निराला जी को विशेष प्रसिद्धि उनकी कविता के कारण मिली।

बीज शब्द-

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', स्वच्छंदता, फक्कड़पन, प्रगतिशील ,निर्भीकता ।

.उद्देश्य-

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात सक्षम होंगे:

निराला के जीवन को समझने में

निराला जी के काव्यगत विशेषताओं के बारे में जाने में

निराला जी की हिंदी साहित्य में जगह तथा योगदान का आंकलन कर सकेंगे

साहित्य की समीक्षा

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' प्रारम्भिक जीवन-–

निराला जी हिंदी साहित्य के बहू प्रतिभा संपन्न कलाकार एवं साहित्यकार हैं। अपने युग की काव्य परम्परा के प्रति प्रबल विद्रोह एवं स्वच्छंदता का भाव लेकर काव्य – रचना करने वाले महाकवि निराला को हिंदी – काव्य

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

जगत में एक विशिष्ट कवि के रूप में जाना जाता है।

13 **वर्ष** की अल्पायु में **मनोहरा देवी** से इनका विवाह हुआ। लेकिन वह भी शीघ्र ही एक पुत्र और पुत्री का भार इनके ऊपर छोड़ कर इस संसार से विदा हो गयी । सन् 1919 ईस्वी की महामारी में इनकी चाचा एवं पिता की भी मृत्यु हो गयी। पिता की मृत्यु के बाद उन्होंने अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए महिषादल में नौकरी कर ली। किन्तु स्वजनों के स्नेह से वंचित होने के कारण उनके हृदय को बड़ा आघात लगा और नौकरी छोड़कर वह घुमक्कड़ बन गये । इस बीच उन्हें पर्याप्त आर्थिक संकटों से जूझना पड़ा । 1942 ईस्वी तक किसी प्रकार निराला जी लखनऊ में रहे । बाद में वे प्रयाग आ गये ।

यहां उन्हें परम प्रिय युवा एवं विवाहिता **पुत्री सरोज की दुःखद मृत्यु** का सामना करना पड़ा। सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी अपनी इस विवाहिता पुत्री व आर्थिक दुरवस्था एवं काल के क्रूर थपेड़ों से चोट खाकर वे मानसिक दृष्टि से विक्षिप्त से हो गये । उनमें दार्शनिकता का समावेश होता गया । मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत एवं महादेवी वर्मा से उन्हें पर्याप्त आत्मीयता मिली। विषम परिस्थितियों एवं जीवन - संघषों ने उन्हें बाहर से तो पर्याप्त कठोर बना दिया, पर उनका हृदय भीतर से मृदुल एवं कुसुम - कोमल बना रहा । जो भी हो, जीवन में प्रतिकूलता एवं व्यथा झेलते हुए वे थक से गए थे । अतः इनका पारिवारिक जीवन अत्यन्त कष्टमय रहा ।

जन्म - स्थान--

कविवर निराला' का जन्म **बंगाल प्रांत के महिषादल राज्य के मेदिनीपुर जिले की महिषादल** नामक रियासत में 28 फरवरी सन् 1899 ई० में हुआ था।

माता - पिता --

महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के पिता का नाम **पंडित रामसहाय त्रिपाठी** था । तथा इनके **माता के नाम** के सम्बन्ध में हिंदी - साहित्य में कोई साक्ष्य - प्रमाण प्राप्त नहीं।उस समय उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी थी, अतः उन्होंने अपने बालक का पालन - पोषण बड़े दुलार - प्यार से किया। जब निराला जी मात्र 3 **वर्ष के थे तभी उन्हें मातृ - स्नेह से वंचित होना** पड़ा दुर्भाग्यवश उनकी मां परलोक सिधार गयी।

नाम --

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी के बचपन का नाम '**सूर्यकुमार**'था ।

सूर्यकान्त त्रिपाठी की माता जी सूर्य का व्रत रखती थी तथा रविवार को ही 'निराला' का जन्म हुआ,

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

अतः पहले उनका नाम सूर्यकुमार रखा गया । बाद में इनका यही नाम सूर्यकान्त हो गया और उनके **विशिष्ट व निराले स्वभाव के कारण** लोग उन्हें 'निराला' कहने लगे। इस प्रकार इनका नाम **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** पड़ा ।

शिक्षा —

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी की **प्रारंभिक शिक्षा - व्यवस्था महिषादल के हाई स्कूल** में की गई, पर वह पध्दति उन्हें कम रुचिकर लगी। राज्य में समय-समय पर संगीतज्ञो का आना - जाना लगा रहता था, अतः उनका रुझान संगीत की ओर भी गया । बचपन से ही सदग्रंथों के अवलोकन से दर्शन - शास्त्र के अध्ययन में भी उनकी रुचि जगी। **रामकृष्ण परमहंस तथा स्वामी विवेकानंद से भी बहुत प्रभावित थे**। स्कूली शिक्षा तो उनकी नवे दर्जे तक ही हुई थी, किंतु स्वाध्यय से उन्होंने **हिंदी**, **अंग्रेजी**, **बँगला एवं संस्कृत** का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। संगीतकला में उनकी अच्छी अभिरुचि थी ।

निराला जी का व्यक्तित्व —

हिंदी के साहित्यकारों और कवियों में निराला - जैसे व्यक्तित्व के लोग बहुत कम मिलेंगे ।उनमें **पौरुष का अहंकार** था, वाणी का स्वच्छंदता , जीवन की **आत्माभिव्यक्ति** थी, विचारों की **अक्खड़ता** थी और सबसे बढ़कर **निर्भय होकर सच्ची बात कहने** का स्वभाव था। निराला जी को बचपन से ही घुड़सवारी, कुश्ती और खेती का बड़ा शौक था । वे साधारण पुरुष थे ।बहुत कवि एवं लेखक ऐसे होते हैं जिनकी कृतियों को पढ़कर उनका जो रूप सामने आता है वैसा ही उनका वास्तविक जीवन होता है ।

निराला जी इसी प्रकार के अनन्य साधारण व्यक्ति थे । अपने **उदार व निराले** स्वभाव के कारण निराला जी को बार-बार आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था।आर्थिक आभावो के बीच ही पुत्री सरोज का देहांत हो गया ।इस अवसादपूर्ण घटना से व्यथित होकर ही उन्होंने सरोज - स्मृति नामक कविता लिखी। दु:ख और कष्ट से परिपूर्ण उनके व्यक्तित्व में अहम की मात्रा बहुत अधिक थी ।निराला जी अपने लिए कठोर तो दूसरों के लिए नितान्त कोमल थे।

वास्तव में निराला का व्यक्तित्व सबसे अनूठा था।उनके अंदर की विषमताओं ने ही उन्हें असाधारण, असामान्य और निराला बना दिया था।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी का वैवाहिक और पारिवारिक जीवन—

निराला जी का विवाह **13 वर्ष की अल्पायु में ही सन् 1911 ई० में मनोहरा देवी** से कर दिया गया। वे रूप - गुण सम्पन्न और सुशिक्षित युवती थी । लेकिन वह भी शीघ्र ही इनमें साहित्यिक संस्कार जगाकर **एक पुत्र और पुत्री** का भार इनके ऊपर छोड़ कर इस संसार से विदा हो गयी । सन् 1919 ईस्वी की महामारी में इनकी चाचा एवं पिता की भी मृत्यु हो गयी। पिता की मृत्यु के बाद उन्होंने अपने

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

परिवार के भरण-पोषण के लिए महिषादल में नौकरी कर ली। किन्तु प्रिय जनों के प्यार और अपनेपन से वंचित होने के कारण उनके हृदय को बड़ा आघात लगा और नौकरी छोड़कर वह घुमक्कड़ बन गये । इस बीच उन्हें पर्याप्त आर्थिक संकटों से जूझना पड़ा । 1942 ईस्वी तक किसी प्रकार निराला जी लखनऊ में रहे ।बाद में वे प्रयाग आ गये ।

यहां उन्हें प्रिय **पुत्री सरोज की दु:खद मृत्यु** का सामना करना पड़ा। सूर्यकांत त्रिपाठी जी की पुत्री की आकस्मिक मृत्यु ने उन्हें मानसिक दृष्टि से विक्षिप्त कर दिया । इसके बाद का सारा जीवन आर्थिक अनर्थ और संघर्ष का जीवन है। निराला के जीवन की सबसे विशेष बात यह है कि कठिन-से-कठिन परिस्थिति मे भी इन्होंने सिद्धान्त त्यागकर समझौते का रास्ता नहीं अपनाया, संघर्ष का साहस नहीं गवाँया। अतः इनका पारिवारिक जीवन अत्यन्त कष्टमय रहा ।

मृत्यु - स्थान---

निराला जी का देहावसान **15 अक्टूबर 1961** ई० रविवार को चित्रकार कमला शंकर के दारागंज प्रयाग (इलाहाबाद) वाले मकान में प्रात: लगभग 9 बजकर 23 मिनट पर हुआ था। ।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्य---

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी से प्रभावित होकर इन्होंने कलकात्ता में अपनी रुचि के अनुरूप **रामकृष्ण मिशन** के पत्र का समन्वय का सम्पादन भार संभाला। उसके बाद '**मतवाला**' के सम्पादक मण्डल में सम्मिलित हुए।3 वर्ष बाद लखनऊ आकर '**गंगा पुस्तकमाला**' का संपादन करने लगे तथा सुधा के संपादकीय लिखने लगे।फक्कड़ और निर्भीक स्वभाव के कारण यहां भी उनकी नहीं निभी और लखनऊ छोड़कर यह प्रयाग (इलाहाबाद) में रहने लगे।अपना शेष जीवन उन्होंने इलाहाबाद में ही स्वतंत्र रूप से काव्य - साधना करते हुए व्यतीत किया ।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' साहित्यिक - परिचय---

निराला जी जीवन भर अपने काव्य को भव्यता, वेदना और अनुराग से भरते रहे ।अपनी **उग्र स्वच्छन्दता** और **फक्कड़पन** में निराला कबीर से तुलनीय हैं। वैसे ही **मस्त - मौला स्वभाव**, वैसा ही **क्रांतिकारी** स्वर और वैसी ही प्रगाढ़ तन्मयता- दोनों की वाणी **रूढ़ियों और बंधनों के विरोध** में रही है ।

उस भारती के पुत्र ने अपना सब कुछ लुटा दिया, अपने आप लुट गया, पर मरते दम तक उस **स्वाभिमानी**, **निर्भीक कवि** ने हार नहीं मानी और साहित्यकार की सम्मान को सबसे ऊंचा रखा । निराला ने विविध प्रकार के **नवीन भावो एवं विचारों पर आधारित रचनाओं का सृजन किया** । उन्होंने छंद संबंधित तत्कालीन नियमों को तोड़कर **छंदमुक्त रचनाएं** की और हिंदी काव्य के क्षेत्र में एक नए

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

शिल्प का सूत्रपात किया। वर्तमान युग की **छंदमुक्त कविताओं के सूत्रधार निराला** ही थे।

निस्संदेह वे एक ऐसे युग - प्रवर्तक साहित्यस्रष्टा थे जिन्होंने युगो से चली आ रही रीत को बदला। निराला के काव्य में **प्रगतिशील और प्रयोगशील** तो आरंभ से ही थे।समाज - हित को लक्ष्य करने वाले कवि की अधिकांश कविताएँ प्रगतिशील तत्वों का उत्रायन करने वाली हैं। युग - चेतना से प्रेरित कवि ने **रूढ़िवाद का खण्डन**, ब्रिटिश शासन की दमन नीतियाँ, अछूत प्रथा, जातिवाद एवं सांप्रदायिकता, नारी विमोचन, आर्थिक असन्तुलन एवं शोषण से प्रेरित मज़दूर आन्दोलन एवं किसान आन्दोलन, नव साहित्यन्दोलन आदि प्रगतिशील तत्वों को अपनी कविताओं में विशेष महत्व दिया। निराला जी हिंदी - साहित्य के **युग प्रतिनिधि कवि** थे ।

कृतियाँ--

निराला बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार थे । बंगला और पाश्चात्य साहित्य के अनुशीलन से प्रेरित होकर निराला ने सन् 1916 ई० में प्रकाशित अपनी रचना ''जूही की कली'' से हिंदी - जगत में प्रवेश किया ।इसमें स्वच्छंदतावादी काव्यधारा की संपूर्ण विशेषताएं निहित हैं । इसके बाद वे सतत काव्य - रचना में संलग्न रहे। उनकी अनेक रचनाओं का हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। सम्पूर्ण निराला साहित्य का विहंगावलोकन निम्न प्रकार से किया जा सकता है —

काव्य --

अनामिका, परिमल, गीतिका, अनामिका (दूसरा संग्रह) तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, अपरा, बेला, नये पत्ते, अर्चना, आराधना, गीतगुंज एवं सांध्य - काकली आदि।

उपन्यास--

अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरुपमा, चोटी की पकड़, काले कारनामे एवं चमेली (अपूर्ण) !

रेखाचित्र--

कुल्लीभाट, बिल्लेसुर बकरिहा ।

निबंध - संग्रह--

प्रबन्ध - पद्म, प्रबन्ध - प्रतिभा एवं चाबुक ।

आलोचना - ग्रंथ--

रविंद्र कविता कानन, ग्यारह बंगला उपन्यासों का हिंदी अनुवाद , तीन अप्रकाशित नाटक एवं दो जीवन - चरित्र ।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

अनुदित - कृतियां---

देवी चौधरानी, कपाल कुंडला, चंद्रशेखर, स्वामी विवेकानंद के भाषण, आनन्दमठ एवं हिंदी - बंगला - शिक्षा ।

साहित्यिक विशेषताएं-

1.आत्माभिव्यक्ति का काव्य

निराला जी की **काव्य आत्माभिव्यक्ति का काव्य** है । उनके **काव्य** में व्यक्तित्व जीवन का सत्य वक्त हुआ है । निराला छायावादी कवियों में ऐसे कवि हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं में अपने **व्यक्तिगत सुख-दुख की** अनुभूतियों को व्यक्त किया है। उनका पूर्ण जीवन दुख, करुणा एवं निराशा के साथ साथ संघर्ष एवं विषमताओं के साथ बीता, इन्हीं सभी की अभिव्यक्ति उन्होंने अपने काव्य में की है। **'जूही की कली', 'मैं अकेला', 'राम की शक्ति पूजा', 'स्नेह निर्झर बह गया', 'सरोज-स्मृति'** असंख्य उनकी ऐसी रचनाएं हैं जिनमें व्यक्तिगत सुख-दुखों को सुंदर अभिव्यक्ति के साथ पिरोया गया है । एक उदाहरण देखिए-

स्नेह निर्झर बह गया है
रेत ज्यों तन रह गया है
आम की यह डाल जो सुखी दिखी
कह रही है, "अब यहां पिक या शिखी"
नहीं आते, पंक्ति मैं वह हूं लिख

नहीं जिसका अर्थ
जीवन ढह गया है।

- स्नेह निर्झर बह गया'

''राम की शक्ति पूजा'' में राम की हताशा और निराशा के जरिए कवि ने अपने जीवन की निराशा की अभिव्यक्ति की जान पड़ती है। उन्हें जीवन भर लोगों के जिस विरोध का सामना किया उसकी गूंज उनकी कविताओं की पंक्तियों में देखी जा सकती है।

"धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,

धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध ठीक जीवन

''अनामिका'' कविता की व्याख्या करते हुए डॉ रामविलास शर्मा बताते हैं कि इस कविता में सूखी भूमि, सुखी तरु, सूखे वक्त आलवाल जैसे प्रमुख सार्वजनिक और सामाजिक संघर्ष का बोध कराते हैं। '' -जला है जीवन मेरा'' निराला का जीवन जला है। निराला के मन की निराशा, उल्लास ,निषाद, राज ,दुख का वर्णन हिंदी साहित्य रचनाओं से जुड़ा हुआ है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

2- आत्माभिमान का काव्यः

निराला का संपूर्ण काव्य **आत्माभिमान का काव्य** है। अपने **उग्र स्वभाव एवं आत्माभिमान** के कारण वह धीरे-धीरे अपने समकालीनों से कटते गए। **निर्भय होकर सच्ची बात कहने** के कारण उन्होंने साहित्य जगत में अनेक शत्रु बना लिए। इस कारण कई बार उनकी उपेक्षा भी हुई, जिसके कारण उनका आहत अभिमान और अधिक बढ़ गया। वे लिखते हैं-

दिए हैं मैंने जगत को फूल फल
किया है अपनी प्रभा से चकित चल

3- प्रेम एवं सौंदर्य का काव्यः

निराला की आरंभिक रचनाओं में प्रेम और सौंदर्य का प्रभावशाली वर्णन हुआ है। कई स्थानों पर उनका प्रेम निरूपण **लौकिक होने के साथ-साथ अलौकिक** भी बन गया है। **'जूही की कली'** नामक कविता प्रेम और सौंदर्य का उत्कृष्ट उदाहरण है-

निर्दई उस नायक ने
निपट निठुराई की
कि झोंको की झाड़ियों से
सुंदर सुकुमार देह सारी झकझोर डाली

4- प्रकृति चित्रण:

अन्य छायावादी कवियों के समान निराला ने भी प्रकृति का बड़ा **सुंदर एवं मनोहारी** वर्णन किया है। उनका गंभीर और विद्रोही स्वभाव उनके प्रकृति चित्र में देखा जा सकता है।इसलिए उनकी प्रकृति कभी रोती है ,तो कभी हंसती हुई दिखाई देती है ,तो कभी प्रेमी प्रेमिका की भांति क्रीडा करती हुई दिखाई देती है। निराला जी के काव्य में प्रकृति चित्रण में बादल ,फूल आदि का प्रमुख वर्णन रहा है। जैसे ''बादल राग'','' जूही की कली '' में **प्रकृति का मानवीकरण** हुआ है।उनकी कविता में प्रकृति निर्जीव पदार्थ की तरह अंकित नहीं है बल्कि वह **सजीव एवं प्राणवान** है। बसंत हो या वर्षा, ग्रीष्म हो या शरद ऋतु उनकी कविता समान रूप से प्रकृति के भव्य रूपों का अंकन करती है। निराला के शब्दों में संध्या का भावपूर्ण चित्र देखिए-

दिवसावसान का समय-
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या सुंदर परी सी,
धीरे, धीरे, धीरे

- जूही की कली

5- रहस्यानुभूति का काव्यः

निराला जी वेदांत दर्शन से अधिक प्रभावित थे और वे भक्ति को सर्वोपरि मानते थे। **'पंचवटी प्रसंग'** में उन्होंने **मुक्ति**

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

और भक्ति पर गंभीर विचार किया है, साथ ही इस कविता में उन्होंने **भक्ति, योग, कर्म, ज्ञान** आदि का समन्वय करने का प्रयास किया है

भक्ति-योग-कर्म-ज्ञान एक ही है
यद्यपि अधिकारियों के निकट मित्र दिखते हैं
एक ही है दूसरा नहीं है कुछ
द्वैत भाव ही है भ्रम

6- देश प्रेम और राष्ट्रीय भावना:

हिंदी साहित्य में जिस समय को छायावाद के नाम से जाना जाता है वह समय हमारा राष्ट्र के सामाजिक स्तर पर एक नाजुक दौर था चारों तरफ स्वाधीनता आंदोलन का बोलबाला था । इस जागरण में छायावादी कवि निराला जी की प्रमुख योगदान रहा । उनकी काव्य में देश प्रेम और राष्ट्रीय भावना का स्वर अत्यंत प्रखर है। **'खून की होली जो खेली", 'जागो फिर एक बार', 'भारती वंदन', 'वीणा वादिनी वर दे'**, आदि कविताओं में कवि ने बार-बार देश प्रेम की भावना को व्यक्त किया है-

भारती जय विजय करें
कनक शस्य कमल धरे
लंका पददल शतदल
गर्जितोर्मि सागर जल
होता शुचि चरण यूगल
धवल धार हार गले

-भारती वंदन'

बलिदान चाहती है जन्मभूमि

खेलोगे जान ले हथेली पर

-महाराज शिवाजी का पत्र

7- प्रगतिशील विचारधारा:

निराला केवल छायावादी कवि ही नहीं थे अपितु वे **प्रगतिवादी** कवि भी थे। उनका काव्य **दलितों और कमजोर वर्गों के प्रति विशेष** सहानुभूति रखता है। निराला के हृदय का करुण भाव समाज के उपेक्षित, कमजोर, पीड़ित एवं शोषित वर्गों की रक्षा को अर्पित है। **'विधवा'** की पीड़ा उन्हें द्रवित करती है तो 'भिखारी' की दीनता एवं भूख उन्हें करुणा से भर जाती है। कड़कड़ाती धूप में इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ती मजदूर नारी का करुण चित्रण पाठक के मन को अनायास ही छू जाता है

वह तोड़ती पत्थर
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर
देख कर कोई नहीं

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं

8- व्यंग्य एवं हास्य का पुटः

निराला ने समाज में फैली विकृतियों एवं विद्रूपताओं का **व्यंग्यात्मक चित्रण** किया है। कुकुरमुत्ता, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की एक प्रसिद्ध लंबी कविता है जिसमें कवि ने पूंजीवादी सभ्यता पर कुकुरमुत्ता के बयान के बहाने करारा व्यंग्य किया गया है। **'कुकुरमुत्ता'** कविता में उनके तीक्ष्ण व्यंग्य को देखा जा सकता है। 'कुकुरमुत्ता' निम्न एवं कमजोर वर्ग का प्रतिनिधि है और वह पूंजीवादी गुलाब को चुनौती देता हुआ कहता है

अबे सुन बे गुलाब
भूल मत पर भाई तूने खुशबू रंगो आब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
दाल पर इतरा रहा है कैपिटलिस्ट

-'कुकुरमुत्ता'

9- सामाजिक चेतना और विद्रोह का काव्य:

निराला के काव्य की एक विशेषता यह भी है कि उनका संपूर्ण काव्य **सामाजिक चेतना और विद्रोह** का काव्य है। 'वीणा वादिनी वर दे' नामक कविता में कवि समाज में नवीन शक्ति का प्रादुर्भाव देखना चाहता है। वह समाज के शोषित और उपेक्षितों की कथा को व्यक्त करता है। अन्य छायावादी कवियों की अपेक्षा निराला अधिक **विरोधी और स्वच्छंदतावादी** दिखाई देते हैं। निराला उन पुरानी रूढ़ियों और जड़ परंपराओं को नष्ट करना चाहते थे जो समाज को खोखला करती जा रही है। काव्य जगत में **मुक्त छंद का प्रवर्तक इसी विद्रोह और जड़ परंपराओं का विरोध है**। **'सरोज स्मृति'** में वे लिखते हैं-

तुम करो ब्याह तोड़ता नियम
मैं सामाजिक योग के प्रथम
लग्न में पढ़ूंगा स्वयं मंत्र
यदि पंडित जी होंगे स्वतंत्र

10- कला पक्ष:

काव्य जगत में **मुक्त छंद** को प्रतिष्ठित करने का श्रेय निराला को ही जाता है। उन्होंने कविता को छंदों की कैद से मुक्त करवाया। उनकी काव्य भाषा **भावपूर्ण एवं विषय अनुकूल** है। उनकी रचनाओं में **उर्दू, फारसी और अंग्रेजी के शब्द** खेलते हुए हैं तो कहीं **संस्कृत निश्चित तत्सम शब्दावली** का।**खड़ी बोली** हिंदी को काव्य की श्रेष्ठ भाषा शुद्ध करने का शेर भी निराला को ही जाता। **सरल और सुबोध शैली** प्रतिवादी रचनाओं में ,**कूलेष्ठ और दुरु शैली** रहस्यवादी और छायवादी रचनाओं में, **हास्य व्यंग पूर्ण शैली** हास्य व्यंग पूर्ण रचनाओं में देखी जा सकती है।उनके काव्य प्रयोगों की विविधता और मौलिकता ने अनेक काव्य आयाम को जन्म दिया और एकही स्तर पर विविध भाषा प्रयोग कर सके। **भाव के अनुसार भाषा और लय का निर्वाह करने** वाले निराला सर्वश्रेष्ठ कवि है। **'राम की**

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

शक्तिपूजा' कविता का उदारण देखिए:

रवि हुआ अस्त; ज्योति के पत्र पर लिखा अमर
रह गया राम-रावण का अपराजेय समर
आज का तीक्ष्ण शर-विधृत-क्षिप्रकर, वेग-प्रखर,
शतशेलसम्वरणशील, नील नभगर्ज्जित-स्वर,
प्रतिपल – परिवर्तित – व्यूह – भेद कौशल समूह
राक्षस – विरुद्ध प्रत्यूह,-क्रुद्ध – कपि विषम हूह,
विच्छुरित वह्नि – राजीवनयन – हतलक्ष्य – बाण,
लोहितलोचन – रावण मदमोचन – महीयान,
राघव-लाघव – रावण – वारण – गत – युग्म – प्रहर,

- राम की शक्तिपूजा'

हिंदी - साहित्य में स्थान

हिंदी - साहित्य में निराला जी का गौरवपूर्ण स्थान है । साहित्य जगत में **मुक्त - छंद के प्रणेता** सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' है।'महाप्राण निराला' **नवीनता के कवि** हैं। जिस समय हिंदी साहित्य में छंद शास्त्र का बोलबाला था उस समय निराला जी ने छंद मुक्त रचनाएं प्रस्तुत कर हिंदी कविता कोछंद शास्त्र की बड़ियो से मुक्त कराया। वे जीवन, साहित्य तथा समाज में सर्वत्र नवीनता के पक्षपाती तथा **रूढ़ियों के कट्टर विरोधी** हैं। **वे छायावादी, प्रगतिवादी और प्रगतिशील** होने के साथ ही **दार्शनिक एवं अद्वितीय प्रतिभा के महान कवि** हैं।उनके कृतित्व में छायावादी और प्रगतिवादी दोनों युगों की विचारधाराओं का सुंदर समन्वय है । उनके काव्य में छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता की समस्त विशेषताएं साकार हुई हैं । उन्होंने छंद, भाषा और भाव आदि को नवीनता प्रदान की है। वह **तत्वज्ञानी और रहस्यवादी भी हैं**, साथ ही **उनमें सामाजिक चेतना भी उत्कृष्ट रूप में विद्यमान** है । उनकी इन्हीं विशेषताओं ने उन्हें हिंदी साहित्य - जगत में निराला स्थान प्रदान किया। अपने निराले व्यक्तित्व से **हिंदी साहित्य - जगत को जो निराला पथ दिखाया**। महाप्राण निराला हिन्दी के साहित्य जगत में एक चमकता तारा है जो हिन्दी के छायावादी सोपान में 'तुलसीदास', 'राम की शक्ति-पूजा', 'जूही की कली', 'सरोज-स्मृति', 'जागो फिर एक बार', जैसी युगांतरकारी रचनाएँ देकर सुनहरे अक्षरों में अपना नाम दर्ज कराया। वहीं दूसरी ओर समाज में व्याप्त अन्याय एवं शोषण के विरुद्ध 'भिक्षुक', 'वह तोड़ती पत्थर', 'कुकुरमुत्ता', जैसी क्रन्तिकारी स्वर-प्रधान मार्मिक रचनाएँ रच कर वे प्रगतिवादी, प्रगतिशील कविता के अग्रदूत बन जाते हैं। भारत के लाखों-करोड़ों खेतिहर किसानों, मज़दूरों, मेहनतकशों, साधनहीन धनहीनों को; हज़ारों वर्षों से बेज़ुबान भारतीय बनी महिलाओं को, पिछड़े वर्गों को पहली बार साहित्य-जगत का काव्यात्मक विषय बनाने का चुनौतिपूर्ण कार्य 'निराला' जी ने करके काव्य-जगत को एकदम नई दिशा दी। निराला जी हिंदी साहित्य के बहू प्रतिभा संपन्न कलाकार एवं साहित्यकार हैं।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

सीमाएं

निराला जी का हिंदी साहित्य जगत में अद्भुत स्थान है तथा उन्होंने अपने रचनाओं से हिंदी साहित्य जगत को अचंभित किया है। , मैं बहुत ही सीमित अध्ययन कर पाई हूं,भविष्य में अध्ययन की अभी बहुत संभावना है। निराला के काव्य में समाज के हर क्षेत्र का वर्णन देखा जा सकता है। किसी भी विषय पर शोध की जा सकती है।

निष्कर्ष-

कहा जा सकता है कि निराला का काव्य **एक चित्रशाला** है जहां जीवन और जगत के बहुरंगी स्वरूप को सुव्यवस्थित किया गया है। उनके काव्य में सुख-दुख, हास्य-करुणा, राग-विराग, शांति-विद्रोह, अध्यात्म-श्रृंगार, आदर्श और यथार्थ जैसे बहुरंगी चित्र अंकित है। उनकी आस्था मानवतावाद में थी और मानव जीवन को सुखमय एवं गौरव में बनाने के लिए ही उन्होंने साहित्य सृजन का काम किया। निःसंदेह वे महान व्यक्ति होने के साथ-साथ एक महान साहित्यकार थे इसीलिए उन्हें **महाप्राण निराला** के नाम से संबोधित किया जाता है।

पाद टिप्पणियां

1. "संध्या सुंदरी"/ सूर्यकांत त्रिपाठी निराला/ पृष्ठ १

2." राम की शक्ति पूजा"/ सूर्यकांत त्रिपाठी निराला / पृष्ठ १

3." एक सरोज स्मृति"/ सूर्यकांत त्रिपाठी निराला/ पृष्ठ ५

4." कुकुरमुत्ता"/ सूर्यकांत त्रिपाठी निराला / पृष्ठ १

5. "तोड़ती पत्थर"/ सूर्यकांत त्रिपाठी निराला /पृष्ठ १

6. 'जूही की कली'/ सूर्यकांत त्रिपाठी निराला /पृष्ठ १

संदर्भ-

1. नंददुलारे वाजपेयी ' कवि निराला ', प्र . सं . 1965

2. प्रो 0 देशराज सिंह भाटी ' निराला और उनकी अपरा ' द्वितीय संस्करण , 1968

3. 'निराला रचनावली खंड-8, राजकमल प्रकाशन , दिल्ली, पृष्ठ 3606-

4. विकिपीडिया

5. जगदीश चंद्र, माथुर निराला में सांस्कृतिक चेतना, अभिनव प्रकाशन , दिल्ली

6. बच्चन सिंह ,क्रांतिकारी कवि निराला, विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक , वाराणसी

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

7. डॉ नगेंद्र और डॉक्टर हरदयाल, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर बॉक्स दरियागंज, नई दिल्ली

8. डॉ रामविलास शर्मा ,निराला की साहित्य साधना ,राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

9. वीणा शर्मा, निराला की काव्य साधना ,हिंदी साहित्य संसार प्रकाशक, दिल्ली